IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विकसित भारत के राह में चीन की चुनौती

वंदना सिंह[1], डॉ.अर्चना सिंह[2]

[1]शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, एम. एम. एच. कॉलेज,गाजियाबाद (उ.प्र.)

[2] एसोसिएट प्रोफेसर,राजनीति विज्ञान विभाग,एम.एम.एच.कॉलेज गाजियाबाद (उ.प्र.)

सार

भारत और चीन, एशिया की दो प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं और वैश्विक शक्ति के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। विकसित भारत के दृष्टिकोण में चीन की भूमिका को चुनौती और अवसर दोनों के रूप में देखा जा सकता है। यह अध्ययन भारत और चीन के बीच आर्थिक, सैन्य, भू-राजनीतिक, और तकनीकी संबंधों की जटिलताओं को समझने का प्रयास करता है।चीन, अपनी मजबूत आर्थिक और तकनीकी क्षमताओं के साथ, भारत के लिए प्रमुख प्रतिस्पर्धा का स्रोत है। यह प्रतिस्पर्धा सीमा विवाद, व्यापार असंतुलन, और रणनीतिक दबाव के रूप और संप्रभुता के लिए प्रमुख चुनौतियां उत्पन्न करता है। साथ ही, चीन का बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) भारत के लिए रणनीतिक चिंता का कारण बनता है, क्योंकि यह दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में चीन के प्रभाव को बढ़ाता है।आर्थिक दृष्टि से, भारत-चीन व्यापार असंतुलन एक प्रमुख चुनौती है। चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, लेकिन आयात और निर्यात के बीच बड़ा अंतर भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक है। इसके अतिरिक्त, चीन की तकनीकी प्रगति और भारत में चीनी ऐप्स और प्रौद्योगिकी का वर्चस्व भारतीय डिजिटल संप्रभुता के लिए खतरा उत्पन्न करता है।हालांकि, चीन की चुनौती भारत को आत्मनिर्भर बनने और अपनी तकनीकी और औद्योगिक क्षमता बढ़ाने का अवसर भी प्रदान करती है। भारत चीन पर निर्भरता कम करने और राष्ट्रीय सुरक्षा मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।इस अध्ययन में यह भी विश्लेषण किया गया है कि भारत को अपनी कूटनीतिक और रणनीतिक नीतियों को कैसे सुदृढ़

करना चाहिए। क्षेत्रीय सहयोग, वैश्विक मंचों पर सक्रिय भागीदारी, और चीन की विस्तारवादी नीतियों का प्रभावी विरोध भारत के लिए आवश्यक है।

की वर्ड्स- विकसित भारत, भारत-चीन संबंध,सीमा विवाद,आर्थिक प्रतिस्पर्धा, भू-राजनीतिक रणनीति, डिजिटल संप्रभुता, आत्मनिर्भर भारत,BRI,राष्ट्रीय सुरक्षा

परिचय

अतीत काल में भारत की पहचान सांस्कृतिक विश्व गुरू के साथ-साथ सोने की चिड़िया के रूप में रही है। इसके पीछे की मुख्य वजह प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता,उर्वर भूमि की उपलब्धता, विश्व से जोड़ते भारत के व्यापारिक मार्ग इस चहुमुंखी तौर पर समृद्धशाली और विकसित बनाते थे।प्राचीन भारत कला,संस्कृति,विज्ञान और साहित्यिक दि्ष्टकोण से समृद्ध था,इसके साथ ही बहुमूल्य रत्नों,मसालों और सिल्क रूट का केंद्र था।यही कारण था कि भारत की गौरवशाली परंपरा ने हमेशा से ही यात्रियों और व्यपारियों को अपनी तरफ आकर्षित किया है।

भारत के उसी गौरवशाली पहचान को भारतवासी एक बार फिर से प्राप्त करना चाहते हैं और विकसित भारत का सपना हर भारतीय की आंकाक्षा है। 2047 में देश की आजादी को 100 वर्ष पूरे हो जाएंगे ऐसे में भारत को समृद्ध,समावेशी और सतत विकासशील राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के लिए विकसित भारत 2047 का विजन रखा गया है।

विकसित भारत 2047: उद्देश्य और लक्ष्य

विकसित भारत 2047 वर्तमान भारत सरकार का एक महत्वकांक्षी रोडमैप है जिसका उद्देश्य 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है।भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली के लाल किले से कहा था कि 2047 में जब भारत प्रवेश करेगा तब हम आजादी के 100 साल पूरे कर लेंगे तब तक भारत के हर नागरिक को ये संकल्प लेना होगा कि भारत को विकसित बनाने में वो अपना योगदान देगा।विकसित भारत यानी बेरोजगारी,अशिक्षा,कुपोषण,प्रदूषण से मुक्त देश,विकसित आर्थिक संरचना,हिंसा से मुक्ति,सामाजिक आर्थिक,सैन्य रूप में आत्मनिर्भर देश,स्वच्छ जलवायु,खाद्य पदार्थों की उपलब्धता,प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि,मातृ-शिशु मृत्यु दर में कमी,चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में सशक्त भारत की स्थापना,पड़ोसी देश का मददगार,आतंक के खिलाफ एकजुट विश्व रचना के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाने वाले देश के रूप में भारत को स्थापित करना विकसित भारत 2047 के विजन में शामिल है।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि ये समय भारत के लिए स्वर्णिम काल है भारत के पास युवा शक्ति की उपलब्धता है इसलिए आने वाले करीब 30 सालों में बिना किसी गतिरोधके लगातार प्रगति के दिशा में कार्य किया जाएगा,क्योंकि 21वीं सदी भारत की सदी है और इस अवसर का लाभ उठाते हुए एक विकसित देश के रूप में भारत को स्थापित करने का संकल्प लिया गया है।

भारत के विकसित होने का अर्थ है वैश्विक मंच पर भारत नेतृत्वकर्ता की भूमिका में होगा और वैश्विक नीति में सभी देशों की भागीदारी सुनिश्चित करने में मदद करेगा।जलवायु,सुरक्षा आतंकवाद,भुखमरी और महामारी की परिस्थितियों से निपटने में मददगार देशों की पंक्ति में सबसे आगे खड़ा रहेगा,और वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना को साकार करेगा।

विकसित भारत की संकल्पना की इस यात्रा में कुछ चुनौतियां भी हैं जिनमें चीन एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में उभर कर सामने आता है।क्योंकि विकसित संकल्पना का लक्ष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब देश आंतरिक औऱ बाह्य दोनों में स्थिर और सुरक्षित हो।ऐसे में चीन की आर्थिक औऱ सैन्य शक्ति के साथ अन्य देशों के खिलाफ विस्तारवादी नीति और क्षेत्रीय दबाव भारत के विकास के मार्ग में कुछ चुनौतियां उत्पन्न करता है।

भारत और चीन संबंध अतीत से वर्तमान तक

अतीत से वर्तमान तक एक देश के रूप में भारत की यात्रा निरंतर प्रगति की यात्रा रही है।आर्थिक,सामाजिक,सैन्य,तकनीकी के क्षेत्र में भारत नित नए उपल्बिधियों को हासिल कर रहा है।धरती से लेकर अंतरिक्ष तक सफलता के नए आयाम गढ़ रहा है।21वीं सदी में भारत वैश्विक महाशक्ति की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।भारत की प्रगति अवरूद्ध ना हो इसके लिए चीन की चुनौतियों से पार पाना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि चीन ने एशिया के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर आर्थिक औऱ सैन्य ताकत के रूप में अपनी मौजूदगी दर्ज करवाई है,इसके साथ ही अपनी विस्तारवादी नीति के तहत पड़ोसी देशों के लिए चुनौतियां भी खड़ी कर रहा है और भारत इससे अछूता नहीं है।

भारत औऱ चीन एशिया के दो ऐसे विशाल देश हैं जो कई समानताओं को समेटे हुए हैं।भारत और चीन के बीच अतीत से ही आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में मधुर संबंध रहे हैं।लेकिन औपनिवेशिक शक्तियों से आजादी के बाद भारत ने अपने सभी पड़ोसी देशों के प्रति सहयोग और सदभाव की नीति अपनाई और आज भी इसके लिए भारत प्रयासरत है।लेकिन कालांतर में भारत-चीन के बीच राष्ट्रीय हित के मुद्दे पर टकराव ने दोनों देशों के मधुर संबंधों में खटास पैदा कर दी जिसका परिणाम भारत-चीन युद्ध के रूप में देखने को मिला।एक देश के रूप में भारत ने पड़ोसी देशों के प्रति हमेशा मित्रता का भाव रखा और इसमें चीन के साथ भी मित्रता का भाव शामिल था।भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू का विश्वास था कि भारत और चीन मिलकर एशिया को विश्व में महत्वपूर्ण स्थान दिलाएंगे और हिंदी चीनी भाई-भाई का नारा देने के बाद भी परिणाम ठीक इसके विपरीत देखने को मिला।औपनिवेशक काल से लेकर अब तक भारत चीन संबंधों में कई घटनाक्रम देखने को मिले हैं,हालांकि भारत चीन के बीच संबंध कोई नई घटना नहीं है बल्कि दोनों देशों के बीच प्राचीन काल से संबंधों के तार जुड़े रहे हैं।दोनों देशों के ऐतिहासिक संबंधों का अध्ययन करने पर ये दृष्टिगोचर होता है कि दोनों ही देश स्थापना के बाद भले ही कई राजनीतिक घटनाक्रम के चलते राजनीतिक औऱ आर्थिक उतार चढ़ाव के साक्षी बने हो लेकिन इनके संबंधों की जड़ें बहुत गहरी रही हैं। भारत-चीन के

मध्य सांस्कृति आदान प्रदान जिसमें यात्राएं,साहित्य, धार्मिक प्रचार प्रसार की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।सिल्क रूट के माध्यम से व्यापारिक जुड़ाव भी कई राजवंशों के काल में रहा जिसने आगे चलकर दोनों देशों के संबंधों को गतिशीलता प्रदान की।वैश्विक पटल पर भारत चीन जैसी महाशक्तियों का उदय आधुनिक काल की एक महत्वपूर्ण विशेषता मानी जाती है।दोनों देशों के मध्य आपसी संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू ये है कि आपसी संबंधों में राष्ट्रीय हित के मुद्दे पर टकराहट की स्थिति ने भले ही संबंधों में अर्द्धविराम लगाया लेकिन विवादों को वार्ता के जरिए सुलझाने के प्रयास जारी हैं।

भारत और चीन के बीच विवाद के मुद्दे

भारत और चीन के बीच विवाद के कई कारण रहे हैं।इन कारणों ने भारत चीन संबंधों को नकारात्मक तरीके से प्रभावित किया।1990 के दशक में जब भारत खुद को परमाणु शक्ति संपन्न देश के रूप में स्थापित कर रहा था तब चीन ने भारत के खिलाफ पाकिस्तान को नाभकीय सहायता दी,चीन की तरफ से नभारत के परमाणु कार्यक्रम पर रोक लगाने की प्रवृत्ति ने भारत के मन में चीन के प्रति अविश्वास को जन्म दिया।इसके अलावा एशिया में चीन भारत की भूमिका को लेकर भी दुष्प्रचार करने में कभी पीछे नहीं रहा।चीन ने भारत के सहयोगी रवैये को अन्य पड़ोसी देशों के समक्ष चुनौती के रूप में रख कर गोलबंदी करने की कोशिश की।वर्तमान समय में चीन की तरफ से एशिया की राजनीति को वर्चस्व की राजनीति में तब्दील करने की कोशिश की जा रही है व्यापारिक और आर्थिक क्षेत्र में नकारात्मक प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया जा रहा है इसके अलावा सुरक्षा परिषद में भारत की स्थाई सदस्यता को लेकर भी चीन की तरफ से रोड़ा खड़ा किया जा रहा है।भारत और चीन के बीच तिब्बत,सीमा विवाद,भारत के खिलाफ पाकिस्तान को सहयोग करने की नीति ने भारत के समक्ष अविश्वास के भाव को और मजबूत करने का काम किया है।

हालांकि इतना अवश्य है कि भारत ने चीन से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए सशक्त रणनीति के उपायों का सहारा लिया है,यही कारण है की सीमा विवाद और तिब्बत की समस्या को सुलझाने के लिए संवाद का सहारा लिया जा रहा है।क्योंकि भारत की विदेश नीति में हिंसा के जगह संवाद को प्राथमिकता दी गई है,लेकिन दोनों के बीच अनसुलझे मुद्दों ने भविष्य को अनिश्चित बनाने का काम किया है।

चीन की तरफ से उत्पन्न आर्थिक चुनौती

चीन आज विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और उसका विनिर्माण क्षेत्र पूरी दुनिया पर हावी है। इसके अलावा, चीन की कंपनियां सस्ते उत्पादों के माध्यम से भारतीय बाजार पर कब्जा जमाने की कोशिश करती हैं, जिससे भारतीय उद्योगों को नुकसान पहुंचता है।भारत के लिए जरूरी है कि वह अपने विनिर्माण और तकनीकी क्षेत्रों को मजबूत करे, विदेशी निवेश आकर्षित करे, और घरेलू उद्योगों को सशक्त बनाए।नीति आकर्षक जगह माना जा रहा है जो अपना मैन्युफैक्चरिंग काम चीन से हटाना चाहती हैं। यह बदलाव भारत

को अपनी मैन्युफैक्चरिंग क्षमता, खासकर हाई-टेक उद्योगों में, बढ़ाने का मौका देता है लेकिन अब तक भारत

रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि हाल के सालों में भारत का वैश्विक व्यापार में हिस्सा उन उद्योगों में कम हुआ है, जिनमें ज्यादा कामकाजी हाथों की जरूरत होती है, जबकि भारत के पास इस क्षेत्र में काफी संसाधन हैं। प्राकृतिक और संवर्धित मोतियों का व्यापार घटा है, क्योंकि प्राकृतिक मोतियां कम हो गई हैं और चीन में दक्षिणी सागर की मोतियों की मांग बढ़ी है।अर्थशास्त्रियों का कहना है कि भारतीय उद्योगों की निर्भरता भी चीन से आयात होने वाले कलपुर्जों और चीनी उत्पादों पर है।

पिछले आर्थिक सर्वे में यह कहा गया कि भारत को चीन से आयात बढ़ाए बिना चीनी निवेश के लिए अपने दरवाजे खोलने चाहिए। इस सर्वे के अनुसार ऐसा करके भारत ग्लोबल सप्लाई चेन में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा सकता है। आज यदि चीन ग्लोबल सप्लाई चेन का केंद्र है तो इसीलिए कि उसके कारोबारी अपने उत्पादों की गुणवत्ता विश्वस्तरीय बनाने में सक्षम हो गए हैं। भारत को ग्लोबल सप्लाई चेन का हिस्सा बनने की जरूरत है। इसके लिए चीनी निवेश की मदद ली जा सकती है, लेकिन इसके प्रति सतर्क रहना होगा कि चीनी वस्तुओं के आयात के कारण चीन के साथ व्यापार घाटा और न बढ़ने पाए। सीमा पर सैन्य तनाव दूर होने के बाद चीन के साथ संबंध सामान्य करने के नाम पर ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए, जिससे वह अपने आर्थिक-व्यापारिक एजेंडे को पूरा करने में समर्थ हो जाए।

दिल्ली में फ़ॉर स्कूल ऑफ़ मैनेजमेंट में चीनी मामलों के विशेषज्ञ डॉक्टर फ़ैसल अहमद के मुताबिक़ भारत को इस समय निर्यात आधारित विकास पर ध्यान केंद्रित करने की ज़रूरत है। यही समय की मांग है।

पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों की भी सलाह है कि भारत अपनी सैन्य और आर्थिक क्षमता को पूरा तभी कर पाएगा जब देश में विकास दर उच्च होगा और इसके लिए जरूरी है कि देश के अंदर विदेशी निवेश को बढ़ावा मिले और आर्थिक सुधारों को गति दी जाए।भारत के 2029 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का अनुमान है। आईएमएफ़ के अनुसार भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया की सभी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सब से तेज़ी से आगे बढ़ती रहेगी 1990 में चीनी अर्थव्यवस्था भारत की तुलना में थोड़ी ही बड़ी थी। आज चीन की जीडीपी भारत से 5.46 गुना बड़ी है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है,भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 2047 तक 20 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगा बशर्ते कि अगले 25 वर्षों में वार्षिक औसत वृद्धि 7-7.5 प्रतिशत हो।

सीमा विवाद और सैन्य चुनौती

भारत और चीन के बीच 3488 किलोमीटर लंबी सीमा पर कई दशकों से विवाद चल रहा है। डोकलाम और गलवान घाटी जैसी घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि चीन का रवैया आक्रामक और विस्तारवादी है। चीन का बुनियादी ढांचे का निर्माण और सैन्य ठिकानों की स्थापना भारत की सुरक्षा के लिए सीधा खतरा है।भारत

को अपनी सैन्य क्षमता को बढ़ाने, आधुनिक हथियार प्रणाली विकसित करने और रणनीतिक साझेदारी (जैसे क्वाड समूह) को मजबूत करने की जरूरत है ताकि चीन की आक्रामकता का सामना किया जा सके।

प्रौद्योगिकी और साइबर सुरक्षा

चीन तकनीकी क्षेत्र में भी तेजी से प्रगति कर रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, 5जी, और डिजिटल तकनीकों में उसकी बढ़त भारत के लिए एक बड़ी चुनौती है। साथ ही, चीन से जुड़े साइबर हमलों ने यह दर्शाया है कि भारत को अपनी साइबर सुरक्षा को मजबूत करने की आवश्यकता है।सरकार को न केवल घरेलू तकनीकी क्षेत्र को प्रोत्साहित करना चाहिए, बल्कि साइबर सुरक्षा ढांचे को भी उन्नत करना होगा।

भूराजनीतिक दबाव

वन बेल्ट वन रोड (OBOR) पहल चीन द्वारा प्रस्तावित एक महत्त्वाकांक्षी आधारभूत ढाँचा विकास एवं संपर्क परियोजना है जिसका लक्ष्य चीन को सड़क, रेल एवं जलमार्गों के माध्यम से यूरोप, अफ्रीका और एशिया से जोड़ना है, चीन की OBOR पहल में चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) को भी शामिल कर लिया गया है। चूँकि CPEC गलियारा पाक अधिकृत कश्मीर से होकर गुज़र रहा है जिसे भारत अपना हिस्सा मानता है।जिसकी वजह से भारत चीन के इस परियोजना का हिस्सा नहीं है क्योंकि भारत इसे अपनी संप्रभुता यूरोप में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है। वह भारत के पड़ोसी देशों जैसे पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, और बांग्लादेश में भारी निवेश कर रहा है, जिससे क्षेत्रीय संतुलन भारत के खिलाफ झुकता दिख रहा है।

चीन के प्रति मोदीकालीन विदेश नीति

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने चीन के प्रति संतुलित लेकिन सतर्क नीति अपनाई है। भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंध मजबूत करने, क्वाड और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय भूमिका निभाने, और आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत घरेलू क्षमता को बढ़ाने की दिशा में काम किया है।मोदी सरकार ने यह स्पष्ट किया है कि भारत की संप्रभुता और सुरक्षा पर कोई समझौता नहीं किया जाएगा। इसके अलावा, चीनी वस्तुओं और निवेश पर निर्भरता कम करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। हालांकि, व्यापार और निवेश के क्षेत्र में अभी भी चीन का प्रभाव बना हुआ है।

भारत का मार्ग

1. आर्थिक रणनीति

भारत को अपने विनिर्माण क्षेत्र को मजबूत करने और निर्यात आधारित विकास पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। इसके लिए उच्च तकनीकी उद्योगों में निवेश, व्यापारिक सुधार, और वैश्विक सप्लाई चेन में अपनी भागीदारी बढ़ानी होगी।

2. सैन्य और सुरक्षा नीति

भारत को अपनी सैन्य ताकत को आधुनिक बनाने, स्वदेशी रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देने, और रणनीतिक साझेदारियों को मजबूत करने की आवश्यकता है। क्वाड जैसे संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाने से चीन के क्षेत्रीय प्रभाव का मुकाबला किया जा सकता है।

3. तकनीकी और साइबर सुरक्षा

सरकार को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, 5जी, और डिजिटल प्रौद्योगिकी में निवेश बढ़ाना होगा। साथ ही, साइबर सुरक्षा ढांचे को उन्नत करने और घरेलू तकनीकी उद्योगों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

4. भूराजनीतिक रणनीति

भारत को पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंध मजबूत करने, उनके विकास में योगदान देने और चीन के प्रभाव को कम करने के लिए कूटनीतिक प्रयास तेज करने होंगे।

निष्कर्ष

भारत के विकास की राह में चीन की चुनौती बड़ी और जटिल है। लेकिन भारत के पास इसे पार करने की क्षमता और इच्छाशक्ति दोनों है। आर्थिक, सैन्य, और तकनीकी क्षेत्र में प्रगति के साथ-साथ वैश्विक मंचों पर सक्रिय भूमिका निभाकर, भारत चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला कर सकता है।2047 तक भारत को एक विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने के लिए सरकार, उद्योग, और नागरिकों के समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। चीन की चुनौती को अवसर में बदलते हुए, भारत को विश्व में अपनी नेतृत्वकारी भूमिका स्थापित करनी होगी।

संदर्भ सूची

है: नीति आयोग रिपोर्ट. द प्रिंट हिंदी

https://hindi.theprint.in/india/economy/india-struggling-to-capitalize-on-china-plus-one-opportunity-niti-aayog-report/760501

2. गुप्ता, एस. (2024, 26 अक्तूबर), चीन की आर्थिक चुनौती से भी सतर्क रहे भारत, जागरण

https://www.jagran.com/editorial/apnibaat-india-should-also-be-cautious-about-china-economic-challenge-23822276.html

3. अहमद, जे. (2022, 15 अक्तूबर), भारत क्या चीन को अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर पीछे छोड़ देगा?, बीबीसी हिंदी

https://www.bbc.com/hindi/india-63248570

4. सुथार, डॉ. एच.आर. (2019), भारत-चीन सीमा संबंधी विवाद: सामान्य अवलोकन, आरआर जर्नल्स

https://rrjournals.com/index.php/rrijm/article/view/818

5. तिवारी, ए. के. (2002), भारत-चीन संबंध: राजीव गांधी से अटल बिहारी वाजपेयी तक

https://44books.com/bharat-china-sambandh-rajeev-gandhi-se-atal-bihari-bajpayi-tak-anant-kumar-tiwari.html

6. गुप्ता, एम.(2019), भारत-चीन कूटनीतिक संबंध. दिल्ली: एटलांटिक पब्लिशर्स

7. सिंह, ए. के. (2020), भारत विदेश नीति का बदलता सुरक्षा परिदृश्य (भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा की चुनौतियां), नई दिल्ली: भारती पब्लिकेशंस

8. कुमार, एस. (2016), हिमालय पर लाल छाया, दिल्ली: प्रभात प्रकाशन

9. विकसित भारत पर निबंध: 2047 का लक्ष्य, मार्ग और विशेषता (2024,28 नवंबर),Chegg India. https://www.cheggindia.com/hi/viksit-bharat-par-nibandh/

10. दृष्टि आईएएस, (2019, 14 अक्तूबर), भारत-चीन संबंध: चुनौतियां और उभरते मुद्दे,दृष्टि आईएएस

https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/india-china-relations-challenges-and-emerging-issues

11.बाजपेई, के., और पंत, एच. वी. (2020), भारत-चीन संबंध: सीमा मुद्दा और उससे आगे, रूटलेज

12.मोहन, सी. आर. (2021), वैश्वीकरण युग में भारत-चीन प्रतिद्वंद्विता, जॉर्जटाउन यूनिवर्सिटी प्रेस

13. कृष्णन, ए. (2020), भारत की चीन चुनौती: चीन के उदय और भारत के लिए उसके मायने, हार्पर कॉलिन्स इंडिया

14. रॉय, एम. एस. (2013), भारत और चीन: असहज पड़ोसी। केडब्ल्यू पब्लिशर्स

15. रंगनाथन, एस. (2015), चीन-भारत आर्थिक संबंध: सीमाओं से परे, स्प्रिंगर

16. सुब्रमणियन, एन. (2020), वैश्वीकरण के युग में चीन और भारत, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस